

शेख़ फ़रीद – सबद ८९
लमी लमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

लमी लमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥
बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६॥

सार: नदी निरंतर बहती रहती है और अपनी धाराओं से अपने किनारों को शक्तिशाली रूप से नया आकार देती रहती है। जो चीज़ विनाश जैसी लगती है, वह असल में एक बदलाव है क्योंकि पानी अपने आस-पास की ज़मीन को तराशता रहता है। ठीक इसी तरह, जीवन की गति हमारे विश्वास और पहचान की कठोर सीमाओं को नरम कर देती है, यह हमें उन चीज़ों से अपनी पकड़ ढीली करने में मदद करती है जो कभी हमें अटल और अडिग लगती थीं। बदलाव को अपनाकर, हम अपनी पहचान को फिर से परिभाषित कर सकते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे नदी धरती को नया आकार देती है। जीवन की धारा के आगे स्वयं को समर्पित करने से हम अपने भीतर की नई गहराइयों को खोज पाते हैं और अपने 'सच्चे स्वरूप' को अपनाने का साहस जुटा पाते हैं।

लमी लमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥
नदी, लंबी दूरी तक निरंतर बहती है और अपने किनारों को ही प्रेम से काटती रहती है। यह हमें स्मरण कराता है कि बदलाव हमारे दृष्टिकोण के लगातार विकास के साथ ही आता है जिससे हम अपनी पुरानी आदतों और अहंकार को पीछे छोड़ पाते हैं।

बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६॥
यदि नाविक सतर्क रहे तब भंवर नाव को क्या ही नुक़सान पहुँचा सकता है। यह सजगता की सुरक्षात्मक शक्ति की ओर संकेत करता है, यदि हमारा आंतरिक जागरूकता चौकस है तब बाहरी उथल-पुथल हमारी अंतरात्मा को विचलित नहीं कर सकती। (८६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद प्रभावशाली ढंग से कहते हैं कि यदि नाविक सतर्क रहे और उथल-पुथल के बीच भी कुशलता से नाव चलाते हुए निरंतर आगे बढ़ता रहे तब भंवर नाव के लिए कोई ख़तरा पैदा नहीं कर सकता। ठीक इसी तरह, भले ही जीवन के माया-लोभ हमारे चारों ओर भंवर की तरह मंडराते रहें लेकिन एक सतर्क नाविक की तरह अपनी जागरूकता बनाए रखने से, यह हमें राह से भटकाने में असमर्थ होते हैं। यह मानसिकता हमें जीवन की चुनौतियों का सामना, एक निश्चित उद्देश्य और स्पष्टता के साथ करने की शक्ति प्रदान करती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com